तया हीनं विधातः मां कथं पश्यन्न दूयसे।

सिक्तं स्वयमिव स्नेहाद्वन्ध्यमाश्रमवृक्षकम् ।।70।।

अन्वय विधातः ! तया हीन मां स्नेहात् स्वयमिव सिक्तम् वन्ध्यम् आश्रमवृक्षकम् इव पश्यन् कथम् न दूयसे?

अनुवाद हे नियमों के रचयिता गुरु, जिस प्रकार स्वयं प्रेमपूर्वक जल से सींचकर बढ़ाए हुए आश्रम के वृक्षों को फल से शून्य देखकर आपका दु:खी होना स्वाभाविक है उसी प्रकार आपके शिष्य मुझको भी पुत्र से रहित देखते हुए आप दु:खी क्यों नहीं होते?

टिप्पणियाँ

विधातः 'विधात' शब्द का सम्बोधन एकवचन, हे नियामक, हे निर्माता गुरु जी ! यह वशिष्ठ ऋषि का राजा द्वारा किया गया सम्बोधन है। वशिष्ठ के लिए 'विधातृ' सम्बोधन का प्रयोग इसलिए किया गया है कि ब्रह्मा की सन्तान होने के कारण महर्षि वशिष्ठ जी राजा को पुत्र-प्राप्ति करवाने में सहायक हो सकते हैं।

दूयसे धातु दू लट्, मध्यम पुरुष, एकवचन, आप दु:खी होते हैं, पीड़ित होते हैं।

आश्रमवृक्षकम् अनुकम्पनीयो वृक्षः इति वृक्षकः, आश्रमस्य वृक्षकः इति आश्रमवृक्षकः (षष्ठी तत्पुरुष तम्।

पश्यन् धातु दृश् शतृ प्रत्यय, देखते हुए।

स्नेहात् प्रेम्णा, प्रेम से। हेतौ पञ्चमी।

सिक्तम् धातु सिञ्च् क्त, सींचे हुए।

बन्ध्यम् धातु बन्ध् यक्, निष्फल, अफल।

स्नेहात् प्रेम से। हेतु के कारण पञ्चमी।